इकाई 3 समाजशास्त्र का मानव विज्ञान के साथ संबंध*

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान की प्रकृति

3.3 समाजशास्त्र का उद्‌भव एवं इतिहास

3.4 मानव विज्ञान का उद्‌भव एवं इतिहास

3.5 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य समानताएं

3.6 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य भिन्नताएँ

3.7 सारांश

3.8 संदर्भ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न बातों को समझ पाएंगे :

- मानव विज्ञान के साथ समाजशास्त्र के संबंधों को जान पाएंगे;
- समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान की प्रकृति को जान पाएंगे;
- समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के उद्‌भव एवं इतिहास को जान पाएंगे;
- समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य समानताओं एवं भिन्नताओं की जांच कर पाएंगे; तथा
- समसामयिक दौर में समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान की प्रकृति को जान पाएंगे।

3.1 प्रस्तावना

समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानवविज्ञान कई पहलुओं के आधार पर एक दूसरे से संबंधित हैं। जांच एवं पद्धति के कुछ क्षेत्रों में कभी-कभी समाजशास्त्र को सामाजिक मानव विज्ञान से अलग करना कठिन है। जाँच के विषय, पद्धति, अभ्यास एवं परंपरा के आधार पर इन दोनों विषयों में कुछ भिन्नताएँ भी हैं जो देखी जा सकती हैं। हालांकि इस प्रकार का अंतर बहुत कम है तथापि ये अंतर भी विश्वविद्यालय प्रणालियों में विभिन्न शैक्षिक विषयों एवं विभागों के विकास के साथ भिन्नता का विषय बन जाते हैं। सही मायने में जॉन बीट्टी (1980) उल्लेख करते हैं कि "समाजशास्त्र का विषय सामाजिक मानव विज्ञान का सबसे नजदीकी विषय है तथा ये दोनों विषय अपनी अनेक सैद्धांतिक समस्याओं और हितों को एक दूसरे के साथ साझा करते हैं। सामाजिक मानवविज्ञानी अपने आप में समाजशास्त्री भी होते हैं , परंतु वे एक ही समय में उनसे कुछ कम भी होते हैं, क्योंकि उनके जाँच का वास्तविक क्षेत्र पूरी तरह से अधिक प्रतिबंधित होता है, और वे उसी समय कई बार उनसे आगे भी होते हैं क्योंकि वे सामाजिक संबंधों पर बल देते हैं, तथा साथ ही वे संस्कृति के

*डॉ. आर.वाशुम, इग्नू

अन्य पहलुओं पर भी बल देते हैं "(पृष्ठ 31)। इसलिए इन दोनों विषयों के बीच के संबंधों को समझने हेतु इनके ऐतिहासिक एवं समकालीन विकास को समझना जरूरी है।

3.2 समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान की प्रकृति

समाजशास्त्र सामाजिक विज्ञान क्षेत्र का सबसे नया विषय है। यह सबसे तेज़ गति से बढ़ आगे रहे शैक्षिक विषयों में से एक है। 'समाजशास्त्र' शब्द लैटिन शब्द 'सोशिअस' ('संगी-साथी' अथवा 'सहयोगी') एवं ग्रीक शब्द 'लॉजी'/'लोगोस' ('ज्ञान') से बनाया गया है। 1838 में ऑगस्ट कॉम्टे द्वारा 'समाजशास्त्र' शब्द को बनाया गया। मानव समाज का एक वैज्ञानिक अध्ययन समाजशास्त्र है जो कि सामाजिक घटनाओं के संदर्भों को समझाने की कोशिश करता है। इसमें मानव व्यवहार के सामूहिक पहलुओं पर जोर दिया जाता है। इस विषय की व्यापक प्रकृति ने इसे मानव विज्ञान, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, भूगोल, शिक्षा, कानून एवं दर्शनशास्त्र जैसे अनेक सामाजिक विज्ञान के विषयों के साथ जोड़ा है। मानव विज्ञान (जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'अन्थ्रोपोस' जिसका अर्थ ' मानव ' है और 'लॉगिया'/'लोगोस' अर्थात 'का अध्ययन' से हुई है) वह एकमात्र विषय है जो मानव समाज के अध्ययन में समाजशास्त्र के दायरे को पार करता है जिसमें सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान (जिसे सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान भी कहा जाता है), भौतिक मानव विज्ञान, पुरातात्विक मानव विज्ञान (जिसे पूर्व-ऐतिहासिक पुरातत्व भी कहा जाता है) एवं भाषा वैज्ञानिक मानव विज्ञान की शाखाएं भी सम्मिलित हैं। मरियम वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार " मानव विज्ञान शब्द का प्रयोग 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किया गया "। यह माना जाता है कि 1805 में पहली बार 'मानव विज्ञान' शब्द का प्रयोग दिखाई पड़ा (मैक्जी एवं वारम्स, 2012; 6) ।

ऐतिहासिक रूप से सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान प्रारंभ से ही समाजशास्त्र के बहुत समीप रहा है क्योंकि ये दोनों ही मानव समाज का अध्ययन करते हैं। हालांकि मानव विज्ञान को पूर्व-साक्षर समाजों (जिसे प्रारंभिक मानवविज्ञानियों एवं अन्य विद्वानों द्वारा गलत तरीके से 'आदिम' समाज के रूप में रूपायित किया गया है) का अध्ययन माना गया है एवं समाजशास्त्र को समकालीन, शहरी तथा विकसित समाजों से अधिक जुड़ा हुआ माना जाता है, और यह अंतर आज के युग में सत्य नहीं है। मानव विज्ञान के क्षेत्र में पहले यह प्रवृत्ति थी कि यह सूक्ष्म अध्ययन (खास तौर से असाधारण गांव के अध्ययन) से जुड़ा हुआ था और समाजशास्त्र वृहत अध्ययन (खास तौर से आधुनिक समाज) के साथ जो कि वर्तमान समय में सच नहीं रहा है। इसी प्रकार ग्रामीण समुदायों के अध्ययन को पहले मानव विज्ञानियों के साथ जोड़ा जाता था एवं शहरी समुदायों के अध्ययन को समाजशास्त्रियों के साथ उस समय जोड़ा जाता था जब ये विषय विकास के प्रारंभिक चरणों में थे और ये बातें समय के साथ अब मलिन हो चुकी हैं । वर्तमान समय में एक प्रवृत्ति स्थापित की गई है जहां एक ओर समाजशास्त्रियों ने ग्रामीण समुदायों, गांवों एवं सूक्ष्म ढांचों पर अधिक अध्ययन किए हैं, वहीं मानवविज्ञानी शहरी ढांचों एवं वृहत अध्ययनों की ओर रुख कर चुके हैं। इस उभरती हुई नई प्रवृत्ति के पर्याप्त उदाहरण मौजूद हैं जो विकासशील देशों में समाजशास्त्रियों एवं मानवविज्ञानी द्वारा किए गए अध्ययनों में स्पष्ट रूप से झलकते हैं। इसी करण समाजशास्त्रियों एवं मानव विज्ञान और खास तौर से सामाजिक मानव विज्ञान एवं/अथवा सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच जाँच एवं अभिरुचि के क्षेत्रों में परस्पर व्याप्ति बहुत अधिक हुई है।

3.3 समाजशास्त्र का उद्भव एवं इतिहास

समाज के एक वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में समाजशास्त्र विषय क्षेत्र में विकास का अपेक्षाकृत लघु इतिहास रहा है। इसकी शुरुआत 19वीं सदी में एक शैक्षिक विषय के रूप

में हुई। हालांकि समाज का अध्ययन समाजशास्त्र हेतु विशिष्ट नहीं है, यह 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में यूनानी दार्शनिकों सुकरात हेतु 4 शताब्दी ईसा पूर्व में प्लेटो एवं अरस्तू हेतु और पहली शताब्दी ईसा पूर्व में रोमन दार्शनिक मार्कस तुल्लीअस सिसरो हेतु लंबे समय तक उनकी रूचि का विषय रहा है जिन्होंने अपने समय में समाज को समझने में अत्यधिक योगदान दिया। मानव समाज के व्यवस्थित अध्ययन का उन्होंने प्रयास किया, मुख्य रूप से समाज, दर्शन, राजनीति, कानून एवं राज्य के सामान्य विवेचन पर। 16वीं शताब्दी ईस्वी तक समाज एवं राज्य से संबंधित थॉमस हॉब्स एवं मेकियावेली के अध्ययन (कार्य) समाज एवं राज्य की अवधारणाओं को समझने हेतु प्रभावशाली रहे। यूरोप में पुनर्जागरण के प्रभाव के बाद 18वीं शताब्दी ईस्वी तक, वहां अनेक प्रतिष्ठित दार्शनिक हुए जिन्होंने समाज को समझने में अपना अत्यधिक योगदान दिया और उन दार्शनिकों में रूसो, विको एवं बैरन डी मोंटेस्क्यू भी सम्मिलित थे जिन्होंने उस समय की सामाजिक घटनाओं का सामना किया। इन प्रारंभिक कार्यों ने निश्चित रूप से सामाजिक विज्ञान के विकास एवं समाजशास्त्र और मानव विज्ञान सहित मानव समाज के विज्ञान हेतु दार्शनिक आधारशीला की नींव रखी। मानव समाज के अध्ययन हेतु सकारात्मकता ने समाज की अवधारणा को किसी दैवीय अथवा ईश्वर प्रदत्त स्थिति से बदलकर रख दिया जिसे अब मानव की उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है। इसने समाज के उद्देश्य को संभव बना दिया तथा मानव प्रयास एवं कार्रवाई के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की धारणा की भी पेशकाश की।

हालांकि यूरोप में 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में होने वाले विभिन्न बौद्धिक एवं सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन समाजशास्त्र के प्रादुर्भाव हेतु सबसे महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। यूरोप में फ्रांसीसी क्रांति एवं औद्योगिक क्रांति कुछ महत्वपूर्ण प्रभावों में सम्मिलित है। हालांकि, क्लाउड हेनरी सेंट साइमन ने "समाज के विज्ञान" के विचार का उपयोग किया, तथापि अगस्त कॉम्टे (1798-1857), वह फ्रांसीसी विद्वान् थे जिन्हें आम तौर पर समाजशास्त्र के उद्भव की नींव रखने का श्रेय जाता है। 'समाजशास्त्र' शब्द का प्रयोग 1838 में अगस्ट कॉम्ट द्वारा अपनी पुस्तक, पॉजिटिव फिलॉसफी में किया गया। सामाजिक घटना के व्यवस्थित अवलोकन एवं वर्गीकरण के आधार पर वह समाजशास्त्र को विज्ञान मानते हैं। हर्बर्ट स्पेंसर, अंग्रेज सामाजिक दार्शनिक समाजशास्त्र की नींव रखने वालों में अग्रणी है। मानव विज्ञान की जैविक समानता के आधार पर उनकी किताब प्रिंसिपल्स ऑफ़ सोशियोलॉजी (1876), उस समय की एक महत्वपूर्ण योगदान थी। अमेरिका में सामाजिक दार्शनिक, लेस्टर एफ वार्ड ने अपनी पुस्तक, डायनामिक सोशियोलॉजी (1883) द्वारा समाजशास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया जो कि सामाजिक प्रगति एवं सामाजिक कार्रवाई की अवधारणाओं से संबंधित है परंतु वैज्ञानिक पद्धति का इस्तेमाल करके समाजशास्त्र के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान इमाइल दुर्खीम ने अपनी रचनाओं रूल्स ऑफ़ सोशियोलॉजीकल मेथड (1895) और सुसाइड (1897) में किया। समाजशास्त्र के अग्रणी मैक्स वेबर ने सामाजिक घटनाओं की सूझबूझ हेतु एक नए प्रकार के दृष्टिकोण को पेश किया। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म तथा इकोनॉमी एंड सोसाइटी शामिल है। समाजशास्त्र के विकास में कार्ल मार्क्स ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, हालांकि उनके योगदान समाजशास्त्र की सीमा को लांघकर काफी आगे जाते हैं। समाजशास्त्र से संबंधित उनकी सबसे लोकप्रिय किताब दास कैपिटल है। समाज शास्त्र के कुछ अन्य अग्रदूतों में जॉर्ज हर्बर्ट मीड, विल्फ्रेडो पारेतो, जॉर्ज साईमेल और फर्डिनेंड टोंनी के नाम शामिल हैं। समाज शास्त्र के इन अग्रदूतों का अनुसरण चार्ल्स हॉर्टन कूली, पिटिरिम सोरोकिन, सी राइट मिल्स, टैल्कॉट पार्सन्स, रॉबर्ट के मर्टन, इरविंग गोफमैन, जॉर्ज सी होमन्स, मिशेल फूको, जुर्गन हबर्मस, पियरे बौरदिएउ एवं एंथनी गिडेंस सहित अनेक प्रसिद्ध आधुनिक समाजशास्त्रियों ने किया।

3.4 मानव विज्ञान का उद्‌भव एवं इतिहास

मानव विज्ञान का क्षेत्र एक विविध एवं व्यापक क्षेत्र है जिसमें मनुष्यों एवं उनके संस्कृति- समाज का अध्ययन किया जाता है। वास्तविकता यह है कि इसे व्यापक विषय माना जाता है जो मानवों के अध्ययन और इसके विविध पहलुओं से संबंधित है। मानव विज्ञान और उसके शैक्षिक पेशे की विषय वस्तु प्राकृतिक विज्ञान एवं मानविकी से शुरू हुई। आज भी इसी प्रवृत्ति का अनुसरण किया जाता है। इस स्थिति का मुख्य कारण यह है कि इस विषय को 'मानव जाति के समग्र अध्ययन' के रूप में देखा जाता है। इसका प्रादुर्भाव इस बात के साथ हुआ है कि मनुष्य एक प्रजाति के रूप में विकसित हुए हैं और अन्य सभी प्राकृतिक प्रजातियों एवं घटनाओं के अनुरूप प्राकृतिक नियमों का अनुपालन करते हैं। मानव विज्ञान के अत्यधिक भिन्न विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए, मानव विज्ञान के बौद्धिक विकास और इसके उद्‌भव के बारे में व्यापक रूप से पता लगाना मुश्किल है। तथापि, इस विषय के प्रारंभ और विकास के रुझानों की पहचान व्यापक रूप से की जा सकती है। इसका ऐतिहासिक चित्रण सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान (ब्रिटेन में स्थापित सामाजिक मानव विज्ञान एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रयोग की जाने वाली सांस्कृतिक मानव विज्ञान) पर केंद्रित हो सकता है क्योंकि यह समाजशास्त्र के साथ मानव विज्ञान की सबसे समीपवर्ती शाखा है।

समाजशास्त्र की भांति मानव विज्ञान के उद्‌भव एवं विकास को पाश्चात्य जगत में वैज्ञानिक विकास से सीधे सीधे जोड़ा जाता है। मानव विज्ञान की स्थापना ग्रीको रोमन पुनर्जागरण काल से हुई, खास तौर से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हेरोडॉटस के लेखन के साथ। वोगेट (1975:7) के अनुसार, हेरोडॉटस "को संभावित अग्रदूत के रूप में भी उद्धृत किया गया है, नृवंशविज्ञान के "जनक" के रूप में नहीं"। तत्कालीन ग्रीक दार्शनिक, खास तौर से, सुकरात, प्लेटो और अरस्तु ने भी मनुष्य और समाज के अध्ययन पर प्रभाव डाला। तदुपरांत, रोमन दार्शनिक मार्कस तुलियस सीसेरो ने भी मानव समाज के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई शताब्दियों के बाद कुछ दार्शनिकों ने समाज एवं राज्य के अध्ययन में रूचि लेनी शुरू की, खास तौर से 16वीं शताब्दी ईस्वी में। इन विद्वानों में थॉमस हॉब्स और मैकियावेली शामिल हैं। इससे पहले, 14वीं शताब्दी ईस्वी में नैतिक ऐतिहासिक दर्शन एवं सामाजिक घटनाओं के संरचनात्मक-कार्यात्मक विश्लेषण से संबंधित इब्न खलदुन के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में उल्लेख किया जा सकता है।

यूरोप में पुनर्जागरण के प्रभाव के बाद 18वीं शताब्दी ईस्वी तक, वहां अनेक प्रतिष्ठित दार्शनिक हुए जिन्होंने समाज को समझने में अपना अत्यधिक योगदान दिया और उन दार्शनिकों में रूसो, विको एवं बैरन डी मोंटेस्क्यू भी सम्मिलित थे जिन्होंने उस समय की सामाजिक घटनाओं का सामना किया। इन प्रारंभिक कार्यों ने निश्चित रूप से सामाजिक विज्ञान के विकास एवं समाजशास्त्र और मानव विज्ञान सहित मानव समाज के विज्ञान हेतु दार्शनिक आधारशिला की नींव रखी। मानव विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान का विकास जो पहले के दार्शनिक एवं ऐतिहासिक अध्ययनों से आगे जाता है वह दो चरणों में सामने आया। प्रथम चरण (1725-1840) में "दार्शनिक वैज्ञानिक इतिहास से मनुष्य, समाज एवं सभ्यता के अध्ययन को अलग करने में सफल रहे और इस प्रकार उन्होंने एक सामान्य सामाजिक विज्ञान को तैयार किया" (वोगेट, 19 75: 41)। हालांकि, होबेल (1958) का यह मानना है कि "मानव विज्ञान मुख्य रूप से प्राकृतिक विज्ञान से प्रकट हुआ है एवं प्राकृतिक विज्ञान परंपरा का निर्वहन एक बड़े स्तर पर करता है" (पृष्ठ 9) और इसके स्थान पर इतिहास या दर्शन से नहीं। दूसरी ओर, मार्विन हैरिस (1979) का यह मत है कि मानव विज्ञान "इतिहास के विज्ञान के रूप में शुरू हुआ" (पृष्ठ 1)। इसके पहले के संबंध और मानव विज्ञान की

प्रकृति की समस्या ऐसी है कि 20वीं शताब्दी के मध्य में ई.ई. इवांस-प्रिचर्ड को भी ब्रिटिश मानव विज्ञान (खास तौर से सामाजिक मानव विज्ञान) की स्थिति से जूझना पड़ा। सामाजिक मानव विज्ञान की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कहा कि "उन लोगों की राय व्यापक रूप से भिन्न है जो प्राकृतिक मानव विज्ञान के रूप में सामाजिक विज्ञान को मानते हैं एवं उन लोगों की तरह जो स्वयं उनकी (इवांस-प्रिचर्ड) भांति इसे एक मानविकी की विषय मानते हैं। यह अंतर शायद उस समय सबसे स्पष्ट होता है जब मानव विज्ञान एवं इतिहास के बीच के संबंधों पर चर्चा की जाती है "(इवांस-प्रिचर्ड, 1951:7)। एक विषय के रूप में मानव विज्ञान का विकास व्यापार, यात्रा एवं उपनिवेशीकरण हेतु यूरोप के लोगों का दुनिया के अन्य हिस्सों में फैलना था। मानव विविधता और भिन्नता को समझाने के प्रयासों के अंतर्गत मानव विज्ञान विकसित हुआ। इसे प्रारंभ में 'अन्य संस्कृतियों' के अध्ययन के रूप में भी जाना जाता था और इस तरह इसे समाजशास्त्र से अलग किया जाता था जिसे पाश्चात्य लोगों द्वारा उनके अपने समाज के अध्ययन के रूप में देखा जाता था।

दूसरे चरण (1840-1890) में "प्राकृतिक विज्ञान में एक स्थिर संतुलित मॉडल से एक गतिशील मॉडल में बदलाव हुआ। इसका अंत थर्मोडायनामिक और डार्विनियन विकासवादी सिद्धांत के परिचय के साथ हुआ "(वोगेट, 1975: 42)। मानव विज्ञान की तरह विविध क्षेत्रों के साथ, 1860 के दशक में एक सामान्य मानव विज्ञान विषय में एकीकृत करने हेतु प्रयास किया गया जो मनुष्य के प्रारंभिक इतिहास से जुड़ा होगा। 1870 तक और उसके बाद "मानव विज्ञान के एक विशिष्ट गुण ने खुद को प्रकट करना शुरू किया" और वह भी भौतिक मानव विज्ञान, प्रागैतिहासिक एवं नृवंशविज्ञान को एकीकृत करके (सीएफ, उपरोक्तानुसार)। इस अवधि में मानव विज्ञान के उद्भव को शैक्षिक विषय में शामिल किया गया है। यह भौतिक और जैविक क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति की जीत की प्रेरणा के माध्यम से संभव हुआ जिसके बारे में उन्नीसवीं शताब्दी के मानवविज्ञानी मानते थे कि सामाजिक-सांस्कृतिक घटनाएं खोज करने योग्य कानूनी सिद्धांत थीं। यह दृढ़ विश्वास पूर्व अवधि की चाहत के साथ उनके अपने हितों में सम्मिलित हो गया तथा इसे अठारहवीं शताब्दी के ज्ञान एवं मानव जाति के सार्वभौमिक इतिहास की दृष्टि हेतु सामाजिक विज्ञान का नाम दिया गया (हैरिस, 1979:1)। हालांकि, उन्नीसवीं शताब्दी में यह एक शैक्षिक विषय के रूप में उभरा। कुपर (2018) के अनुसार, "1860 के दशक में मानव विज्ञान के आधुनिक प्रवचन को सुनिश्चित रूप दिया गया तथा जीवविज्ञान, भाषा विज्ञान, एवं प्रागैतिहासिक पुरातत्व विज्ञान में प्रगति से इसे बल मिला"। मानव विज्ञान का विभाजन अलग-अलग उप-विषयों (अथवा विशेष क्षेत्रों), अर्थात्, भौतिक अथवा जैविक मानव विज्ञान, पुरातत्व मानव विज्ञान, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक मानव विज्ञान (जिसे सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान भी कहा जाता है), तथा भाषा वैज्ञानिक मानव विज्ञान – और कुछ इसमें मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञान को सम्मिलित करेंगे, 19वीं सदी के बाद से 20वीं सदी के मध्य तक सामने आया। मानव विज्ञान की इन शाखाओं में से सामाजिक या सांस्कृतिक मानव विज्ञान (जिसे सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान भी कहा जाता है) समाजशास्त्र से मानव विज्ञान की सबसे नजदीकी शाखा है।

मानव विज्ञान (सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान) के अग्रदूतों में जो शामिल हैं वे हैं- लेविस हेनरी मॉर्गन (1818-1881), जॉन फर्ग्यूसन मैकलेनैन (1827-1881), सर एडवर्ड बर्नेट टेलर (1832-19 17), फ्रांज बोस (1858-19 42), सर जेम्स जॉर्ज फ्रैज़र (1854-19 41) एवं डब्ल्यू.एच.आर. रिवेर्सद्य कुछ दशक उपरांत (1920 के दशक से), मानव विज्ञान (सामाजिक-

सांस्कृतिक मानव विज्ञान), खास तौर से दो उत्कृष्ट मानवविज्ञानियों, अर्थात् ब्रोनीस्लाव मालिनोव्स्की एवं ए.आर. रैडक्लिफ-ब्राउन के लेखकीय कार्यों के साथ 'आधुनिक मानव विज्ञान' के रूप में विकसित हुआ। एक तरफ मालिनोव्स्की की किताब आर्गोनॉट्स ऑफ़ द वेस्टर्न पैसिफिक (1922) एवं रैडक्लिफ-ब्राउन के द अंडमान आइलैंडर्स (1922) सबसे प्रारंभिक महवपूर्ण आधुनिक रचनाएँ थीं जो स्पष्ट रूप से मानव विज्ञान के नए आधुनिक दौर के उद्भव को चिह्नित करती हैं। ये रचनाएँ मुख्य रूप से सैद्धांतिक अभिविन्यास के साथ गहन क्षेत्रीय कार्यों (नृवंशविज्ञान कार्यों) पर आधारित थीं। इन दोनों मानवविज्ञानियों की रचनाओं का प्रभाव शीघ्र ही ब्रिटेन से आगे उत्तरी अमेरिका तक पहुंच जिसे आम तौर पर सांस्कृतिक मानव विज्ञान का केंद्र माना जाता था। ऐसे अनेक मानवविज्ञानी भी थे जिन्होंने उस समय एवं बाद में आधुनिक मानव विज्ञान के विकास में अपना योगदान दिया परंतु वे लोग मालिनोव्स्की एवं रैडक्लिफ-ब्राउन की भांति प्रसिद्धि और ऊंचाई हासिल नहीं कर सके।

3.5 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य समानताएं

समाजशास्त्र सामाजिक/सांस्कृतिक (सामाजिक-सांस्कृतिक) मानव विज्ञान के बहुत समीपवर्ती विषय है। इन दोनों के मध्य का संबंध इतना घनिष्ठ है कि वर्तमान समय में इनके बीच अंतर बहुत ही कम हो गया है। ऐसे कई प्रतिष्ठित मानवविज्ञानी हैं जो समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान, खास तौर से सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच घनिष्ठ संबंधों के पक्षधर हैं। उदाहरण के लिए, फ्रेज़र, शायद पहले मानव विज्ञानी है, जिन्होंने सामाजिक मानव विज्ञान के प्रथम प्रोफेसर के रूप में 1908 में अपने उद्घाटन भाषण में यह परिभाषित किया कि "सामाजिक मानव विज्ञान समाजशास्त्र की एक शाखा है जिसका संबंध आदिम समाजों से है" (रैडक्लिफ-ब्राउन, 19522; सी एफ, वोगेट, 1975: 143)। फ्रैज़र के अनुसार, " समाजशास्त्र को समाज के सबसे सामान्य विज्ञान के रूप में देखा जाना चाहिए। सामाजिक मानव विज्ञान समाजशास्त्र का एक हिस्सा होगा, जो "मूल अथवा प्रारंभिक चरणों, मानव समाज के प्रारंभिक चरण तक सीमित है। फ्रैज़र ने सामाजिक मानव विज्ञान को जंगली जीवन के अध्ययन तक सीमित करते हुए, मानव जाति के प्रारंभिक इतिहास एवं संस्थानों पर मनोवैज्ञानिक बल देते हुए वेट्ज़ और टेलर के विचारों को प्रतिबिंबित किया। (वोगेट, 1975: 143)।

रैडक्लिफ-ब्राउन (1983) के मतानुसार सामाजिक मानव विज्ञान 'तुलनात्मक समाजशास्त्र' है। 'तुलनात्मक समाजशास्त्र' शब्द से उनका तात्पर्य यह रहा होगा कि "वह विज्ञान जो मनुष्य के सामाजिक जीवन की घटनाओं एवं संस्कृति अथवा सभ्यता के अंतर्गत सम्मिलित सभी चीज़ों हेतु प्राकृतिक विज्ञान की सामान्यीकृत पद्धति को लागू करता है" (पृष्ठ 55)। इस तरह उनका विचार है कि सामाजिक मानव विज्ञान को भावसूचक दृष्टिकोण (ideographic approach) (सामान्य वैज्ञानिक तथ्यों एवं प्रक्रियाओं की खोज वह भी सामान्य कानूनों से अलग) के स्थान पर 'नियमान्वेषी' दृष्टिकोण (nomothatic approach) (समाज के सामान्य कानूनों की) की खोज करनी चाहिए। यह "सामान्य कानून" (उपरोक्तानुसार) को स्थापित करने हेतु "एक विशेष घटना या कार्यक्रम" को प्रदर्शित करने की एक पद्धति है। ऐसे कई दूसरे मानवविज्ञानी भी हैं जो लोग उनके विचार से सहमत हैं। उदहारण के लिए, इवान्स-प्रिचर्ड, एक दूसरे प्रसिद्ध मानवविज्ञानी सामाजिक मानव विज्ञान को "सामाजिक अध्ययन की एक शाखा" मानते हैं, वह शाखा जो कि मुख्य रूप से आदिम समाजों के अध्ययन पर बल देती है" (1951:11)। उनका मत है कि "जब लोग समाजशास्त्र की बात करते हैं, तो सामान्य तौर पर वे लोग सभ्य समाजों की विशेष समस्याओं का मन ही मन अध्ययन करते हैं। अगर हम इस अर्थ को शब्द का रूप देते हैं, तो सामाजिक मानव विज्ञान

और समाज के बीच का अंतर केवल क्षेत्रानुगत का अंतर है (उपरोक्तानुसार)। ई.ए. होबेल के अनुसार, समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच संबंध "उनके अर्थ की व्यापकता और एकरूपता है।" दोनों के दोनों सामाजिक अंतर-संबंधों का अध्ययन हैं, अर्थात मनुष्य का मनुष्य के साथ संबंध" (1958:9)। लुसी मैयर (1965) और कई दूसरे मानवविज्ञानी सामाजिक मानव विज्ञान को समाजशास्त्र की 'शाखा' मानते हैं।

यद्यपि समाजशात्र से पहले मानव विज्ञान (भौतिक मानव विज्ञान सहित एकीकृत मानव विज्ञान) का प्रादुर्भाव हुआ और शुरुआत से ही इन दोनों के विषय वस्तुयों में खास तौर से सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच अंतर करना बहुत ही कठिन था। जहाँ मानव जाति एवं उससे संबंधित पहलुओं के समग्र अध्ययन के रूप में मानव विज्ञान को बनाया गया वहीं अगस्ट कॉम्टे ने यह भी माना है कि समाजशास्त्र मानव समाज का गहन अध्ययन होगा, और इस कारण समाजशास्त्र को "सभी विज्ञानों की रानी" कहा जाना चाहिए। मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र ने भी प्राकृतिक विज्ञान के महत्वपूर्ण तत्वों को किसी न किसी तरीके से आत्मसात करते हुए खुद को स्थापित किया, हालांकि मानव विज्ञान (एकीकृत मानव विज्ञान) की विषय-वस्तु ने खास तौर से भौतिक मानव विज्ञान एवं पुरातात्विक मानव विज्ञान के घटकों के कारण भौतिक विज्ञान के साथ इसके संबंध के कारण समाजशास्त्र की सीमा को पार किया है। यहां तक कि जब समाजशास्त्र एवं सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के विषय स्थापित किये गए थे तब भी उनके बीच संबंध मौजूद थे। ये संबंध मुख्य रूप से उनकी विषय वस्तु एवं पद्धति में समानता के कारण हैं। फ्रेड डब्ल्यू वोगेट (1975) के अनुसार, समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान (खास तौर से सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान) के बीच का अंतर व्यापकता, अवधारणा एवं विधि के स्तर के स्थान पर अनुप्रयोग स्तर पर अधिक है। वे कहते हैं कि:

> प्रक्रियात्मक अंतर जिनके द्वारा प्रारंभिक समाजशास्त्रियों ने मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र को एक दूसरे से अलग करने और जोड़ने का प्रयास किया उससे संबंधित विषयों का ऐतिहासिक विकास हुआ। मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र दोनों विषयों ने विज्ञान, संयुक्त विवरण और सामान्यीकरण के मॉडल का अनुसरण किया। इन दोनों विषयों के बीच व्यावहारिक अंतर उस समय आया जब उनके संबंधित प्रतिपादकों ने फील्डवर्क शुरू किया (वोगेट, 1975: 144)।

सच्चाई यह है कि कई ऐसे विश्वविद्यालय एवं कॉलेज थे जहां विश्व के कई विश्वविद्यालयों में एक ही विभाग में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान मौजूद थे। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में इन दोनों के संबंधित शैक्षिक विषयों की स्थापना के साथ उनके बीच अंतर अधिक दिखाई देने लगा। वर्तमान समय में यह संबंध और भी घनिष्ठ हो रहा है जिसके चलते विषय आधारित चारदीवारी के रखरखाव के बावजूद भी दोनों के बीच अंतर करना मुश्किल हो रहा है। इन दोनों विषयों का संबंध इनकी अवधारणाओं का एक दूसरे में उपयोग की आवश्यकता एवं समान सैद्धांतिक एवं अनुसंधान समस्याओं तथा उनके निष्कर्षों की ज़रुरत की वजह से भी है। सच्चाई यह है कि इन दोनों विषयों को अपने आप को मजबूत करने और समाज के अध्ययन की व्यापकता हेतु न्याय करने के लिए एक-दूसरे की जरूरत है ।

पश्चिमी विद्वानों के अनुसार उनके बीच मुख्य अंतर यह था कि जहाँ समाज मानव विज्ञान 'दूसरों' का अध्ययन था वहीं समाजशास्त्र अपने समाज का; गैर पश्चिमी विद्वानों के विषय-वस्तु 'दूसरों' की भांति विषय-वस्तु बन गए तब दोनों विषयों के बीच का अंतर गौण हो गया। उदाहरण के लिए जब पश्चिमी विद्वान जाति को सामाजिक मानव विज्ञान के रूप में अध्ययन करेंगे तब भारतीय विद्वानों के लिए यह समाजशास्त्र भी हो सकता है।

गैर-यूरोपीय एवं गैर-पश्चिमी क्षेत्रों में, खास तौर से 'तीसरी दुनिया' देशों के संदर्भ में "सिद्धांत एवं पद्धति के स्तर पर सामाजिक मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र के बीच अंतर बहुत कमजोर है" (जैन 1986:1)। भारतीय संदर्भ में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच कई मामलों में अंतर करना और भी कठिन हो गया है। इन समानताओ में भारतीय विश्वविद्यालयों में पद्धति, सिद्धांतों एवं शोध अध्ययनों के क्षेत्र में समान पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं। इसमें कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है कि भारत में समाजशास्त्र के कई प्रसिद्ध शोध ग्रामीण ढांचों के साथ गांव पर केंद्रित अध्ययन हैं जिसे सामाजिक मानव विज्ञान का पारंपरिक क्षेत्र माना जाता है। यह भी सच है कि भारत के कुछ प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रशिक्षित सामाजिक मानवविज्ञानी हैं। सच्चाई यह भी है कि भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् (आईसीएसएसआर) सामाजिक विज्ञान की शीर्षक केंद्रीय वित्तीय निधिकरण संस्था समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान को एक ही यूनिट के अंतर्गत मानती है। वर्तमान समय में यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि समाजशास्त्र विभागों या सामाजिक अनुसंधान कार्यों में संकाय सदस्य के रूप में कई सामाजिक मानवविज्ञानियों को रखा गया है?

3.6 समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के मध्य भिन्नताएँ

यद्यपि विषय वस्तु, रुचि, सिद्धांतों एवं पद्धति की समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के क्षेत्र में परस्पर व्यापकता है तथापि इनके बीच कुछ अंतर भी हैं। सबसे पहला और प्रमुख अंतर विषयों की व्यापकता की परिभाषा में निहित है। इस समाजशास्त्र समाज का अध्ययन (अथवा विज्ञान) है, जबकि मानव विज्ञान (एकीकृत मानव विज्ञान) मनुष्य और उन सब चीजों का अध्ययन है जो मानव से संबंधित है। हालांकि समाजशास्त्र एवं सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच अंतर (जिस पर अब प्रकाश डाला जाएगा) बहुत सीमित है।

समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के बीच मुख्य अंतर उनके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के माध्यम से पता लगाया जा सकता है। आम तौर पर मानव विज्ञान को "दर्शन मूलाहीन" माना जाता है जबकि समाजशास्त्र में दर्शन मौजूद है (सराना 1983:14)। जबकि औद्योगिक क्रांति एवं फ्रेंच क्रांति से हुए महान सामाजिक परिवर्तन के बाद समाजशास्त्र के प्रादुर्भाव को मुख्य रूप से सामाजिक परिवर्तन (यूरोपीय सामाजिक संदर्भ में) लाने के प्रयास हेतु जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, मानव विज्ञान के प्रादुर्भाव पर इनका प्रभाव नहीं था जैसे कि समाजशास्त्र या अन्य सामाजिक विज्ञान पर प्रत्यक्ष रूप से इनका प्रभाव था; बल्कि यह यूरोपीय विद्वानों को यूरोपीय समाज से बाहर निकलने एवं पूर्व-साक्षर समाजों ('अन्य' गैर-यूरोपीय समाज) का अध्ययन करने हेतु बौद्धिक एवं भौगोलिक स्थान खोलने का अप्रत्यक्ष प्रभाव था। (सी.एफ. एफ. एरिक्सन एट अल 2001; सराना 1983)। मरियम वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार, "एंथ्रोपोलॉजी शब्द 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रकाश में आया" – अंग्रेजी शब्द 'एंथ्रोपोलॉजी' वर्ष 1805 में पहली बार प्रकाश में आया (मैक्जी एवं वारम्स, 2012; 6) जबकि समाजशास्त्र शब्द बाद में 1838 में बनाया गया ।

समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान (सामाजिक-सांस्कृतिक) के मध्य अभिरुचि के क्षेत्रों का मूल ध्यान विचलन के मुख्य कारकों में से एक रहा है। समाजशास्त्र समाज के अध्ययन मुख्य अभिव्यक्ति के साथ शुरू हुआ और वह भी एक सामान्यीकृत सामाजिक विज्ञान के रूप में, खास तौर से सामाजिक घटनाओं को समझाने हेतु एक बड़े सामाजिक संदर्भ पर ध्यान केंद्रित करते हुए। यह औद्योगिक समाजों (पश्चिमी समाजों, खास तौर से यूरोपीय) के अध्ययन पर बल देता है जिन्हें आधुनिक समाज माना जाता है। दूसरी ओर मानव विज्ञान की प्रारंभिक मुख्य अभिरुचि गैर-यूरोपीय एवं/अथवा गैर-पश्चिमी समाजों के 'अन्य'

विदेशज समुदायों का अध्ययन था। इस करण उनका ध्यान एवं अभ्यास यूरोप अर्थात पश्चिमी समाजों के बाहर स्थित सरल, लघु-स्तरीय एवं पूर्व-साक्षर समाजों के अध्ययन पर ही था। यह प्रवृत्ति खास तौर से 20वीं शताब्दी के मध्य समय से बदल गई जब मानवविज्ञानियों ने अपने क्षेत्रीय अध्ययनों को आधुनिक एवं शहरी ढांचों तक फैलाया, जबकि समाजशास्त्रियों ने ग्रामीण एवं सरल समाजों के अध्ययन की ओर अपना रुख किया ।

समाजशास्त्र एवं सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के मध्य दूसरा अंतर इनकी पद्धति, खास तौर से विधियों एवं अनुसंधान की तकनीक हो सकता है। समाजशास्त्रियों ने आंकड़ा एकत्र करने एवं सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रश्नावली जैसे मात्रात्मक तरीकों को बड़े पैमाने पर अपनाया है। मानव विज्ञान क्षेत्र आधारित विज्ञान के रूप में शुरू हुआ। मुख्य रूप से मानवविज्ञानी अन्य विधियों एवं तकनीकों के साथ गुणात्मक तरीकों का भी उपयोग करते हैं, खास तौर से वे 'प्रतिभागी प्रेक्षण' का उपयोग करते हैं। मानवविज्ञानी क्षेत्रों में जाते हैं एवं कई महीनों तक अथवा यहां तक कि कई वर्षों तक लोगों के साथ रहते हैं और उनके समाज का हिस्सा बनकर उनकी संस्कृति को सीखते हैं। हालांकि लम्बे समय की दौर में अनुसंधान विधियों एवं तकनीकों के उपयोग में अंतर आ गए हैं क्योंकि समाजशास्त्रियों ने गुणात्मक तरीकों को व्यापक रूप से अपनाना शुरू कर दिया है, जबकि मानवविज्ञानी भी गुणात्मक तरीकों के साथ मात्रात्मक तरीकों का उपयोग करना शुरू कर चुके हैं। समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के बीच अंतर इन दोनों विषयों के प्रारंभिक प्रतिपादकों के ऐतिहासिक विकास के कारण भी था, खासतौर से जिस प्रकार से उन्होंने अपने फिल्ड कार्य किए। इस संबंध में, वोगेट (1975: 144) लिखते हैं: उस समय (प्रारंभिक विकास अवस्था) मानव विज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने खुद को एवं अपने विषयों को उस आधार पर अलग नहीं किया जो उन्होंने कहा अपितु उन्होंने अपने कार्यों द्वारा खुद को अलग किया। मानव विज्ञानी ट्रोब्रिंडर्स, जुलस एवं जुनीस के जीवन शैली को रिकॉर्ड करने हेतु मैदान में आए, जबकि समाजशास्त्रियों ने जनगणना के आंकड़ों, साक्षात्कार एवं प्रश्नावली से पश्चिमी देशों के शहरी जीवन पर जानकारी संकलित की। पूर्व-औद्योगिक लोगों की मान्यताओं, रीति-रिवाजों, रस्मों, कला, प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक संगठन के बारे में स्वयं तथ्यों को एकत्रित करने की जरुरत ने मानव विज्ञान पर एक स्थायी प्रभाव डाला एवं नवीन आंकड़ों संग्रह पर हर दम जोर दिया गया।

20वीं शताब्दी के मध्य तक अथवा बाद के सायं तक समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान की प्रकृति की भिन्नता को होबेल (1958) के कथन से संक्षेपित किया जा सकता है, जिस पर वह मुख्य रूप से निम्न ऐतिहासिक कारणों से विचार करते हैं:

> "प्रत्येक क्षेत्र (समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान – यहां तक कि सामाजिक मनोविज्ञान की भी) की एक अलग पृष्ठभूमि रही है जिनके द्वारा जांच के कुछ भिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है, और उनके पारंपरिक दृष्टिकोण एवं अवधारणाओं में अंतर है। मानव विज्ञान संस्कृति एवं सम्पूर्ण समाज के संदर्भ में कार्य करने पर बल देता है। समाज शास्त्र जटिल पश्चिमी समाज के पहलुओं के संदर्भ में कार्य करने पर बल देता है। मानव विज्ञान मुख्य रूप से प्राकृतिक विज्ञान से निकला है एवं इसमें प्राकृतिक विज्ञान की परंपरा का बड़े स्तर पर प्रयोग होता है। फिर भी अध्ययन के इन दोनों क्षेत्रों के बीच पद्धतिगत भिन्नताएँ प्रत्येक वर्ष कम हो जाते हैं, क्योंकि मानव विज्ञान अधिक विश्लेषणात्मक तथा समाजशास्त्र अधिक उद्देश्यपरक बन जाता है, जिससे आज इनके बीच अंतर करना सुविधाजनक है। मानव विज्ञानी मुख्य रूप से आदिम लोगों के समाज पर ध्यान देते हैं और समाजशास्त्री हमारे अपने (यूरोपीय एवं/अथवा पश्चिमी समाजों) समकालीन सभ्यता पर ध्यान केंद्रित करते हैं "(पृष्ठ 9)।

समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध

अलग-अलग देशों एवं संदर्भों में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच संबंध एक समान नहीं रहा है। "समाजशास्त्र क्या है?" की अवधारणा एवं विचार तथा "सामाजिक मानव विज्ञान क्या है?" के सवाल के जबाब में क्षेत्रीय विविधता आ जाती है। इस संबंध में बेते (1974) वर्णन करते हैं कि:

> यूनाइटेड किंगडम में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच विभिन्नता के उद्देश्य की स्थिति महानगरीय देश एवं उपनिवेशों में समाज एवं संस्कृति के बीच का अंतर था, खास तौर से संयुक्त राज्य अमेरिका में यह औद्योगिक शहर में आदिवासी बस्तियों के जीवनशैली के बीच का अंतर था। अमेरिकी शहर की आक्रामक, विस्तृत जगत एवं अमेरिकी बस्तियों की स्थिर, मौत की दुनिया की तुलना में कोई भी दो अलग-अलग संसार नहीं हो सकते। अतः इसमें थोड़ा आश्चर्य होता है कि समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच अंतर को किसी भी दूसरे देश की तुलना में संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिक चिह्नित किया गया। फिर भी यह कोई घटना नहीं हो सकती है कि यूनाइटेड किंगडम में साम्राज्य की क्षति के उपरांत इन दोनों के बीच अंतर कम चिह्नित हो गए जिसने महानगरीय देश एवं उपनिवेशों के बीच की भिन्नता की गति को कम कर दिया (पृष्ठ 703)।

ब्रिटेन में एक सामान्य अवधारणा यह भी है जो " खुद में एवं मूल निवासियों के बीच एक साधारण अंतर लाता है; जब उन्होंने खुद का अध्ययन किया तो वे समाजशास्त्री बन गए और जब उन्होंने मूल निवासियों का अध्ययन किया तो वे सामाजिक मानवविज्ञानी बन गए ... यहां अमेरिका वालों हेतु भी समान अंतर करने की प्रवृत्ति है, हालांकि वह स्पष्ट रूप से नहीं है । जब वे अपने समाज एवं संस्कृति के मूलाधार का अध्ययन करते हैं तो वे समाजशास्त्री बन जाते हैं। और जब वे अन्य समाजों एवं संस्कृतियों खासकर अफ्रीका, एशिया एवं लैटिन अमेरिका (अथवा अपने समाज के कमजोर समूह) का अध्ययन करते हैं तो वे जातीय समाजशास्त्री बन जाते हैं। बहुत ही दुख की बात है कि कुछ भारतीय अब यह महसूस करते हैं कि उन्हें खुद के बीच के अंतर को जानने के लिए इसी पद्यति का इस्तेमाल करना चाहिए " (बेते, 1974:704)।

थर्ड वर्ल्ड के देशों, खास तौर से भारत के संदर्भ में, समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान का संबंध संदिग्ध है। 1920 के दशक में जब भारत में समाजशास्त्र को शुरू किया गया, उस समय "समाजशास्त्र ने अपनी वैधता पहले ही स्थापित कर ली थी; और इस विषय में कुछ जगहों पर अपना स्थान बना लिया था पर सभी पश्चिमी विश्वविद्यालयों में इसे स्थान नहीं मिला था और इस आधार पर भारतीय समाजशास्त्रियों के लिए अपने विश्वविद्यालयों में इसके लिए जगह अथवा सीट का दावा करना अपेक्षाकृत सरल था" (बेते, 2004: 5)। वास्तविकता यह भी है कि "भारतीय विश्वविद्यालय प्रणाली में हमें समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच जो अंतर दिखाई देता है वह भारतीय विद्वानों द्वारा स्वयं नहीं बनाया गया, अपितु पश्चिम से अधिगृहित किया गया। पश्चिमी देशों में ही यह अंतर दोनों विश्व युद्धों के बीच की अवधि में सबसे अधिक उभर कर सामने आया और यह वह समय था जब भारत में समाज एवं संस्कृति विज्ञान अपनी जड़ें जमा रहा था। यदि आज इस भिन्नता से कई भारतीय सामाजिक वैज्ञानिक परेशान हैं, तो ऐसा इसलिए क्योंकि यह उनके कार्य की परिस्थितियों के अनुरूप नहीं है, जो कि किसी भी मामले में मुख्य स्रोत नहीं था, जिससे यह विकसित हुआ " (बेते, 1974: 703)। सच्चाई यह है कि "भारत में कार्य के उद्देश्य की स्थिति बहुत भिन्न है, हालांकि पुराने लेबल अब भी इस्तेमाल किये जाते हैं। लगभग सभी भारतीय – चाहे वे 'समाजशास्त्री' हो या 'सामाजिक मानवविज्ञानी'– वे

भारतीय समाज के किसी न किसी क्षेत्र का अध्ययन करते हैं, जो पूर्ण रूप से न तो बहुत आदिम है और न ही बहुत उन्नत। जब कोई भारतीय 'आदिवासी' गांव का अध्ययन करता है तब वह एक 'मानवविज्ञानी' होता है और जब वह 'गैर आदिवासी' गांव का अध्ययन करता है तो वह एक 'समाजशास्त्री' होता है; अथवा जब वह किसी गांव, आदिवासी अथवा गैर-आदिवासी का अध्ययन करता है, तो वह एक 'मानवविज्ञानी' होता है, परंतु जब किसी नगर या शहर का अध्ययन करता है, तो वह 'समाजशास्त्री' होता है (उपरोक्तानुसारः 703-704)। इसलिए बेते का यह मानना है कि भारत में "आदिवासी' और 'गैर आदिवासी' 'गांव के बीच का अंतर, अथवा गांव और शहर के अंतर संयुक्त राज्य अमेरिका में शहर और बस्तियों के बीच का अंतर अथवा महानगरीय देशों के बीच और ब्रिटिश साम्राज्य में कॉलोनी के बीच के अंतर से एकदम भिन्न प्रकार का होता है " (उपरोक्तानुसारः 704)।

3.7 सारांश

मानव विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का संबंध वास्तव में बहुत घनिष्ट है। ये दोनों विषय एक दूसरे से इतने मिलते जुलते हैं कि इनकी व्यापकता, अभिरुचि क्षेत्रों, सिद्धांतों, पद्धति, और अनुप्रयोग में अंतर करना मुश्किल है। जिन परंपराओं में उन्हें विकसित किया गया था उनके जांच के वांछित क्षेत्रों में भी सम-मिलन (एकरूपता) था। इस कारण समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान दोनों मानव समाज का अध्ययन करते हैं और बड़े पैमाने पर अपनी अपनी सैद्धांतिक समस्याओं और अभिरूचियों को एक दूसरे से साझा करते हैं। इसी कारण कई विद्वान् सामाजिक मानव विज्ञान को समाजशास्त्र या समाजशास्त्र की शाखा मानते हैं। इनकी समानताओं के बावजूद, दोनों विषयों के बीच भिन्नता भी हैं जो कि प्रारंभिक विकास अवस्था के बाद के चरणों तक और इन क्षेत्रों के संदर्भ में और जांच की ज़रुरत, पद्धति, सिद्धांतों एवं अभ्यास के प्रयोग की प्राथमिकता के आधार पर देखे जा सकते हैं। हालांकि इस प्रकार की अंतर संक्षेप में मामूली हैं परन्तु विश्वविद्यालय प्रणालियों में भिन्न-भिन्न शैक्षिक विषयों एवं विभागों के विकास को देखते हुए ये अपने आप में भिन्नता के मामले भी बन जाते हैं। एक और महत्वपूर्ण पहलू जिस पर विचार करने की जरुरत है, वह है समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान की अवधारणा की अस्पष्टता, विशेष रूप से भारत सहित थर्ड वर्ल्ड के देशों के संदर्भ में। समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान जिस प्रकार पश्चिम के आविष्कार हैं, उनकी संकल्पना और अनुभूति तथा साथ ही उसके प्रयोक्ता उलझे हुए और दागदार हैं। सच्चाई यह है कि पश्चिमी समाजशास्त्री खास तौर से अमेरिका एवं ब्रिटेन में समाजशास्त्रियों को 'सामाजिक' या 'सांस्कृतिक' मानवविज्ञानी उस समय मानते हैं जब अनुसंधान अध्ययन जनजातीय आदिवासी और/या ग्रामीण क्षेत्रों और औपनिवेशिक देशों में भी होते हैं। दूसरी ओर वे समाजशास्त्रियों को 'समाजशास्त्री' तब मानेंगे जब वे समाजशास्त्री 'शहरी' और/अथवा 'उन्नत' समाजों का अध्ययन करेंगे। भारतीय समाजशास्त्रियों के संदर्भ में भी यह बात सत्य है। इसलिए, पश्चिमी समाजशास्त्रियों के परिप्रेक्ष्य में सभी भारतीय समाजशास्त्री इस तथ्य हेतु सामाजिक मानवविज्ञानी हैं क्योंकि भारत में समाजशास्त्री किसी न किसी समय 'आदिवासी' एवं 'ग्रामीण' समुदायों तथा शहरी समुदायों दोनों का अध्ययन करते हैं। दूसरी बात यह है कि भारत में कई प्रशिक्षित मानवविज्ञानियों ने भारत में समाजशास्त्र की स्थापना के प्रारंभिक अवस्था से ही समाजशास्त्र को आत्मस्वीकृत किया है। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्रियों एवं सामाजिक मानवविज्ञानियों द्वारा विधियों एवं तकनीकों के उपयोग (या निगमन) की बढ़ती प्रवृत्ति जोकि परंपरागत रूप से समाजशास्त्र या सामाजिक मानव विज्ञान के क्षेत्र के रूप में भिन्न-भिन्न विषयों के रूप में थी उसने भारत में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान के बीच अंतर्संबंधो को आगे बढ़ाया है। यदि यह प्रवृत्ति कोई संकेतक समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान है तब संभावना है कि इन दोनों विषयों के घनिष्ठ संबंध भविष्य में भी जारी रहेंगे?

3.8 बोध प्रश्न

1) समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के प्रादुर्भाव के बारे में चर्चा करें।

2) समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान की समानताओं एवं भिन्नताओं की जांच करें।

3) विशेष रूप से भारत के संदर्भ के साथ समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान के संबंधों पर चर्चा करें।

3.9 संदर्भ

बीटी, जॉन, 1980 (1964), अदर कल्चर्स, लंदन एवं हेनलीः रूटलेज एंड कीगेन पॉल

बेते, आंद्रे, 1974 "सोशियोलॉजी एंड इथ्नोसोशियोलॉजी" इंटरनेशनल सोशल साइंस जर्नल, खंड ग्टप् संख्या 4 पेरिस यूनेस्को

बेते, आंद्रे, 2004 "सोशियोलॉजीः एस्से ऑन अप्रोच एंड मेथड (तृतीय संस्करण), नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस

एरीकसेन, थॉमस हालैंड एंड फिन सिवर्ट निलसन, 2001, ए हिस्ट्री ऑफ एंथ्रापोलॉजी (द्वितीय संस्करण), न्यूयार्क, प्लूटो प्रेस

इवांस-प्रिचार्ड, ई.ई, 1951, सोशल एंथ्रापोलॉजी, लंदनः कोहन एंड वेस्ट लिमिटेड

हेरिस, मार्विन, 1979 (1969) द राइज ऑफ एंथ्रापोलॉजिकल थ्योरी, लंदन एंड हेनलेः रूटलेज एंड केगेन पॉल

हैबेल, ई.ए. 1958, मेन इन द प्रिमिटिव वर्ल्ड, न्यू यॉर्क/लंदन/टोरंटोः मेकग्रा-हिल बुक कंपनी, आईएनसी

जैन, आर.के. 1986, "सोशल एंथ्रापोलॉजी ऑफ इंडियाः थ्योरी एंड मेथड्स" सर्वे ऑफ रिसर्च इन सोशियोलॉजी एंड सोशल एंथ्रापोलॉजी (पृ. 1-50) नई दिल्लीः इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च

कूपर, आदम जे, 2018 "हिस्ट्री ऑफ एंथ्रापोलॉजी" इन साइक्लोपीडिया बिटेनिका ("एंथ्रापोलॉजी") https:@@www-britannica-com@science@anthropology (20 जुलाई 2018)

मेर, लूसी, 1965 एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी, ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,

मेलीनोंस्की, ब्रॉनीसलॉ, 1922, अर्गोनोट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिकः एन एकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइज एंड एडवेंचर इन द आर्किपेलागॉज ऑफ मेलेनिशयन न्यू ग्यूना, लंदनः जॉर्ज रूटलेज एंड संस लिमिटेड

मेकगी, आर.जे. एवं वार्म्स, आर.एल. (2012) एंथ्रापोलॉजिकल थ्योरीः एन इंट्रोडक्ट्री हिस्ट्री (पांचवा संस्करण) यूएसएः मेकग्रा-हिल।

रेडक्लिफ-ब्राउन, ए.आर. 1922, द अंडमान आयरलैंडर्स, लंदनः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

रेडक्लिफ-ब्राउन, ए.आर. 1952, स्ट्रक्चर एंड फंक्शन इन प्रिमिटिव सोसायटीः एस्सेज एंड एड्रेस, ग्लेनोइ, इलियोनोइसः द फ्री प्रेस।

रेडक्लिफ-ब्राउन, ए.आर. 1983 (1958) मेथड इन सोशल एंथ्रापोलॉजी, शिकागो, इलियोनोइसः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस

सरना, गोपाला (1983) सोशियोलॉजी एंड एंथ्रापोलॉजी एंड अदर एस्सेज, कलकत्ताः इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल रिसर्च एंड एप्लाइड एंथ्रापोलॉजी।

वोगेट, फ्रेड डब्ल्यू 1975, ए हिस्ट्री ऑफ इथोनोलॉजी, यूएसएः हॉल्ट, राइनहर्ट एंड विंस्टन

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY